

## CHAPTER 1

# कबीर

CBSE कक्षा 11 · हिंदी (कोर) · आरोह भाग-1 · काव्य खंड

CBSE · Hindi · Class 11

### WHAT THIS CHAPTER DOES

**A** पहले पद का अद्वैत-भाव समझना — ईश्वर की एकता एवं उसके दृष्टांत (सोना-गहना, जल-तरंग, बीज-वृक्ष)।

**B** सबद 'जग बौराना' में खंडित सभी आडंबरों को पहचानना — हिन्दू एवं मुस्लिम दोनों।

Boards prep that builds confidence, not anxiety.

## TODAY'S MISSION

# आज का लक्ष्य

1 पहले पद का अद्वैत-भाव समझना — ईश्वर की एकता एवं उसके दृष्टांत (सोना-गहना, जल-तरंग, बीज-वृक्ष)।

2 सबद 'जग बौराना' में खंडित सभी आडंबरों को पहचानना — हिन्दू एवं मुस्लिम दोनों।

3 कबीर की निर्गुण भक्ति, समन्वय-संदेश एवं सधुक्कड़ी भाषा को जानना।

4 काव्य-सौंदर्य, अलंकार एवं शैली समझकर 6/7 अंक अर्जित करना।

## WHY THIS MATTERS

# यह पाठ क्यों महत्त्वपूर्ण है

- 1 आरोह काव्य खंड का प्रथम पाठ — पूरे वर्ष के काव्यांश-बोध एवं भाव-ग्रहण की नींव।
- 2 प्रति परीक्षा 5-7 अंक। अद्वैत-दृष्टांत, आडंबर-खंडन एवं काव्य-सौंदर्य के प्रश्न लगभग प्रति-वर्ष आते हैं।
- 3 भक्तिकाल की निर्गुण-धारा एवं समाज-सुधार-चेतना का परिचय — आगे की रचनाओं को समझने में सहायक।

TOPIC

A

# कवि एवं पाठ का परिचय

## TOPIC

# कबीर एवं दोनों रचनाएँ

### कवि — कबीर

कबीर हिंदी भक्तिकाल की निर्गुण ज्ञानमार्गी (ज्ञानाश्रयी) धारा के सर्वप्रमुख संत-कवि हैं। उनका जन्म लगभग 1398 ई. में काशी (वाराणसी) के लहरतारा में हुआ माना जाता है; पालन-पोषण नीरू-नीमा नामक जुलाहा (बुनकर) दंपति ने किया। वे स्वामी रामानंद के शिष्य माने जाते हैं। वे शास्त्रीय रूप से 'पढ़े-लिखे' नहीं थे — उनका ज्ञान अनुभव एवं सत्संग-जन्य था। उनकी वाणी शिष्यों द्वारा 'बीजक' में संगृहीत है, जिसके तीन भाग हैं

### पहली रचना — पद

पहली रचना 'हम तौ एक एक करि जांनां' एक 'पद' है, जिसका केंद्रीय भाव अद्वैत — ईश्वर की एकता — है। कबीर घोषणा करते हैं कि उन्होंने ईश्वर को 'एक' ही जाना-पहचाना है, चाहे उसे कोई 'केसव' कहे या 'करीम'। नाम-रूप अनेक होने पर भी मूल सत्ता एक ही है। इस सत्य को न पहचान पाने के कारण ही हिन्दू-तुर्क (मुसलमान) का धार्मिक भेद उत्पन्न हुआ है। यह पद निर्गुण-निराकार ब्रह्म की एकता एवं सामाजिक-धार्मिक सामन्तों का सशक्त उद्घोष

### दूसरी रचना — सबद

दूसरी रचना 'संतों देखत जग बौराना' एक 'सबद' (गेय वाणी) है, जिसमें कबीर संसार के पाखंड एवं बाह्याडंबर पर तीखा प्रहार करते हैं। वे कहते हैं कि संसार 'बौरा' (पागल) हो गया है — उसने सच्चे ज्ञान एवं अंतर्मन की भक्ति को छोड़कर असत्य आडंबरों को सत्य मान लिया है। यहाँ हिन्दू एवं मुसलमान — दोनों के पाखंड का निष्पक्ष खंडन है तथा अंत में सच्ची भक्ति की ओर संकेत है। यह सबद कबीर की सामान्य सधारक एवं निर्भीक चेतना

### निर्गुण भक्ति-धारा

कबीर निर्गुण भक्ति के कवि हैं — वे निराकार, गुणातीत, सर्वव्यापी ब्रह्म की उपासना करते हैं। उनका 'राम' किसी अवतार या मूर्ति का नाम नहीं, अपितु निर्गुण परम-तत्त्व का प्रतीक है। वे मूर्ति-पूजा, अवतारवाद, बाह्य-कर्मकांड एवं धार्मिक संकीर्णता के कट्टर विरोधी थे। उनके अनुसार सच्ची भक्ति बाह्य-चिह्नों में नहीं, अंतर्मन की निर्मलता, प्रेम एवं समता में है। इसी कारण उनकी वाणी में खंडन-मंडन की निर्भीक शैली एवं सामान्य सधारक की एतल चेतना

TOPIC

**B**

**रचनाओं का भावार्थ**

## TOPIC

# दोनों रचनाओं का सार — क्रम से

### पद — ईश्वर की एकता का उद्घोष

पद 'हम तौ एक एक करि जांनं' में कबीर दृढ़ता से कहते हैं कि उन्होंने ईश्वर को 'एक' ही जाना है। जो लोग अनेक देवी-देवता या भिन्न-भिन्न ईश्वर मानते हैं, वे भ्रम में हैं। कबीर के लिए हिन्दू का 'केसव' एवं मुसलमान का 'करीम' एक ही परम-सत्ता के दो नाम हैं। नाम-रूप का यह भेद वास्तविक नहीं, अज्ञान-जनित है। इसी एक सत्य को न पहचान पाने के कारण मनुष्य धर्म के नाम पर परस्पर बँट गया है। यह पद अद्वैत एवं

### पद — अद्वैत के दृष्टांत

अपने अद्वैत-भाव को कबीर सहज, अनुभव-जन्य दृष्टांतों से समझाते हैं। जैसे एक ही सोने (कंचन) से अनेक प्रकार के गहने बनते हैं, फिर भी सबका मूल सोना एक ही है; जैसे एक ही जल में असंख्य लहरें (तरंग) उठती हैं, परंतु लहर जल से भिन्न नहीं; जैसे अनेक बीजों एवं वृक्षों में एक ही जीवन-तत्त्व विद्यमान है — वैसे ही चराचर जगत के अनेक रूपों में एक ही परम सत्ता व्याप्त है। इन मूर्त उदाहरणों से कबीर गूढ़ अध्यात्म को अनांश सरल बना देते हैं।

### सबद — 'जग बौराना' का अर्थ

सबद 'संतों देखत जग बौराना' में कबीर वेदना के साथ कहते हैं कि संसार पागल (बौरा) हो गया है। वह सच्चे ज्ञान एवं भक्ति को छोड़कर पाखंड में फँस गया है — असत्य को सत्य एवं सत्य को असत्य मानने लगा है। यदि कोई सच्ची बात कहे तो लोग उसे मारने दौड़ते हैं, जबकि झूठे ढोंगियों पर विश्वास करते हैं। यह 'बौरापन' जन्मजात मूर्खता नहीं, अपितु विवेक खो देने एवं आडंबरों में उलझ जाने की दयनीय अवस्था है

### सबद — आडंबरों का खंडन

इस सबद में कबीर हिन्दू एवं मुसलमान — दोनों के बाह्याडंबरों का निष्पक्ष खंडन करते हैं। हिन्दू-पक्ष में — पत्थर की मूर्ति पूजना, दिखावटी तीर्थ-स्नान, माला फेरना एवं माथे पर टीका लगाना; मुस्लिम-पक्ष में — टोपी पहनना, दिखावटी रोजा-नमाज़, बाँग (अजान) देकर पीर बन जाना। कबीर व्यंग्य करते हैं कि लोग 'राम' एवं 'रहीम' के नाम पर लड़ते-मरते हैं, जबकि दोनों एक ही ईश्वर हैं। उनका निष्कर्ष — सच्चा दर्शन बाह्य चिंतों में नहीं, अंतर्धान की

## TRY IT · SOLVE BEFORE YOU PEEK

कबीर ने ईश्वर की एकता समझाने के लिए कौन-से तीन प्रमुख दृष्टांत दिए हैं?

### SOLUTION

**ANSWER** कबीर तीन सहज दृष्टांत देते हैं — (1) सोना एवं उससे बने अनेक गहने (मूल तत्त्व एक ही सोना), (2) जल एवं उसकी अनेक लहरें (तरंग जल से भिन्न नहीं), तथा (3) बीज एवं उससे उपजे अनेक वृक्ष (एक ही जीवन-तत्त्व)। इन सबसे वे सिद्ध करते हैं कि नाम-रूप अनेक होने पर भी परम सत्ता एक ही है — यही अद्वैत है।

TOPIC

C

विषय एवं भाव-विश्लेषण

## TOPIC

# पाठ के प्रमुख वैचारिक बिंदु

### अद्वैत — ईश्वर की एकता

पाठ का प्रथम एवं सर्वप्रमुख विचार अद्वैत है — समस्त चराचर जगत में एक ही निराकार परम-सत्ता व्याप्त है। कबीर सोना-गहना, जल-तरंग एवं बीज-वृक्ष के दृष्टांतों द्वारा यह सिद्ध करते हैं कि नाम-रूप का भेद वास्तविक नहीं। 'केसव' (हिन्दू) एवं 'करीम' (मुसलमान) एक ही ईश्वर के दो नाम हैं। इस एकता-बोध से ही सहिष्णुता एवं मानवीय भाईचारा जन्म लेता है। उच्च-अंक के उत्तरों में इस अद्वैत-दृष्टि का उल्लेख अनिवार्य है।

### बाह्याडंबर का खंडन

दूसरा प्रमुख विचार पाखंड एवं बाह्य-कर्मकांड का तीखा खंडन है। कबीर पत्थर-पूजा, दिखावटी तीर्थ-स्नान, माला-टीका (हिन्दू) एवं टोपी-रोजा-बाँग (मुस्लिम) — सभी बाह्य-आडंबरों को व्यर्थ ठहराते हैं। उनके अनुसार ये चिह्न मात्र दिखावा हैं, इनसे सच्ची भक्ति का कोई संबंध नहीं। 'पाहन (पत्थर) पूजे हरि मिलै' — यह असंभव है। सच्चा ईश्वर अंतर्मन की निर्मलता में बसता है, बाहरी आचारों में नहीं। यह उनकी समाज-सधारक चेतना है।

### हिन्दू-मुस्लिम समन्वय

तीसरा विचार सामाजिक-धार्मिक समन्वय एवं समता है। कबीर निष्पक्ष भाव से दोनों समुदायों के पाखंड पर समान प्रहार करते हैं — किसी एक का पक्ष नहीं लेते। वे व्यंग्य करते हैं कि लोग राम-रहीम के नाम पर परस्पर झगड़ते-मरते हैं, जबकि दोनों एक ही ईश्वर के नाम हैं। उनका संदेश है कि धर्म के बाह्य-भेद त्यागकर मनुष्य को एक निराकार ईश्वर की सच्ची भक्ति एवं परस्पर प्रेम-समता अपनानी चाहिए। यह समन्वय भाव भी स्वनाम की सांस्कृतिक

### सच्चा ज्ञान एवं अंतर्मन की भक्ति

चौथा विचार यह है कि सच्ची भक्ति बाह्य-कर्मकांड में नहीं, अपितु ज्ञान, विवेक एवं अंतर्मन की निर्मलता में है। 'जग बौराना' का संपूर्ण क्षोभ इसी ओर संकेत करता है कि संसार सच्चे ज्ञान से विमुक्त होकर आडंबरों में भटक गया है। कबीर चाहते हैं कि मनुष्य आत्म-निरीक्षण करे, अंधविश्वास त्यागे एवं सच्चे प्रेम-भाव से एक ईश्वर को पहचाने। यही ज्ञान-आधारित निर्गुण भक्ति कबीर-काव्य की आत्मा है।

THEOREM · LOAD-BEARING RESULT

# केंद्रीय विचार — निर्गुण अद्वैत बनाम बाह्याडंबर

”

पाठ का मूल वैचारिक आधार है — एक निराकार (निर्गुण) ईश्वर की अद्वैत-सत्ता का प्रतिपादन तथा उसके विपरीत खड़े बाह्याडंबर एवं धार्मिक संकीर्णता का खंडन। कबीर अद्वैत को सत्य एवं आडंबर को असत्य सिद्ध करते हैं।

## STATEMENT

पहले पद में कबीर सोना-गहना, जल-तरंग एवं बीज-वृक्ष के दृष्टान्तों से सिद्ध करते हैं कि चराचर में एक ही परम सत्ता व्याप्त है (अद्वैत)। सबद में वे पत्थर-पूजा, तीर्थ-स्नान, माला-टीका-टोपी एवं राम-रहीम के झगड़े को 'बौरापन' (विवेकहीनता) बताकर इनका खंडन करते हैं। दोनों रचनाएँ मिलकर

## WHY THIS MATTERS

- इस वैचारिक द्वंद्व के बिना पाठ मात्र उपदेश रह जाता। अद्वैत-बोध एवं आडंबर-खंडन भक्तिकाल की निर्गुण-धारा का केंद्रीय स्वर है, और कबीर इसे निर्भीक खंडन-मंडन शैली में प्रस्तुत करते हैं। उच्च-अंक के उत्तरों में 'एकता बनाम आडंबर' के इस द्वंद्व का उल्लेख आवश्यक है।

## WATCH OUT FOR

**NOTE** इसे 'कबीर सभी धर्मों एवं पूजा-पद्धतियों का समर्थन करते हैं' न लिखें — वे बाह्याडंबर का स्पष्ट खंडन करते हैं। साथ ही कबीर को नास्तिक न बताएँ — वे एक निराकार ईश्वर के गहरे आस्तिक हैं।

THEOREM · LOAD-BEARING RESULT

# केंद्रीय संदेश — समता, समन्वय एवं अंतर्मन की भक्ति

पाठ का केंद्रीय संदेश है — एक निराकार ईश्वर की सच्ची भक्ति, हिन्दू-मुसलमान के बीच समता-समन्वय तथा बाह्याडंबर का त्याग। नाम-भेद से तत्त्व-भेद नहीं होता।

## STATEMENT

कबीर सिद्ध करते हैं कि 'केसव' एवं 'करीम' एक ही ईश्वर के दो नाम हैं; अतः धर्म के नाम पर झगड़ा निरर्थक है। सच्ची भक्ति बाह्य-कर्मकांड (पत्थर/तीर्थ/माला/टोपी) में नहीं, अंतर्मन की निर्मलता, प्रेम एवं विवेक में है। 'जग बौराना' का क्षोभ संसार को इसी सत्य की ओर लौटाने का आह्वान है।

## WHY THIS MATTERS

- यह संदेश कबीर को मात्र कवि नहीं, समाज-सुधारक एवं मानवता का प्रवक्ता बनाता है। साम्प्रदायिक सौहार्द एवं अंधविश्वास-निवारण का यह स्वर आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। मूल्यपरक/प्रासंगिकता-आधारित प्रश्नों में इस संदेश का उल्लेख अंक दिलाता है।

## WATCH OUT FOR

**NOTE** संदेश को केवल 'ईश्वर एक है' तक सीमित न करें — इसमें समता, समन्वय, आडंबर-त्याग एवं अंतर्मन की भक्ति — चारों आयाम जुड़े हैं। दृष्टांतों (सोना-गहना/जल-तरंग) के बिना भाव अधूरा रहता है।

## TOPIC

# पाठ के चार प्रमुख भाव-बिंदु

### ईश्वर की एकता की महिमा

इस पाठ का सर्वप्रमुख भाव अद्वैत — एक निराकार ईश्वर की सर्वव्यापकता — है। कबीर सोना-गहना, जल-तरंग एवं बीज-वृक्ष के दृष्टांतों से सिद्ध करते हैं कि नाम-रूप अनेक होने पर भी परम-तत्त्व एक ही है। यह एकता-बोध मनुष्य को संकीर्णता से ऊपर उठाकर व्यापक मानवीय दृष्टि देता है। पाठ का संदेश है कि जब ईश्वर एक है, तो समस्त मानव-जाति भी एक ही परिवार है — यही अद्वैत की सामाजिक देन है।

### पाखंड-खंडन की निर्भीकता

दूसरा भाव बाह्याडंबर का तीखा एवं निर्भीक खंडन है। कबीर बिना किसी भय या पक्षपात के हिन्दू एवं मुसलमान — दोनों के पाखंड (पत्थर-पूजा, तीर्थ, माला-टीका, टोपी-रोजा-बाँग) पर प्रहार करते हैं। उनकी यह निर्भीक वाणी समाज की रूढ़ियों को चुनौती देती है। 'जग बौराना' का क्षोभ इसी पाखंड के विरुद्ध है। कबीर सिखाते हैं कि सच को सच एवं झूठ को झूठ कहने का साहस ही सच्चे संत का लक्षण है।

### हिन्दू-मुस्लिम समन्वय

तीसरा भाव साम्प्रदायिक सौहार्द एवं समता है। कबीर व्यंग्य करते हैं कि लोग राम एवं रहीम के नाम पर लड़ते-मरते हैं, जबकि दोनों एक ही ईश्वर के नाम हैं। वे दोनों समुदायों को समान रूप से उनके आडंबर का दर्पण दिखाते हैं तथा परस्पर प्रेम एवं एकता का आह्वान करते हैं। यह समन्वय-भाव भारतीय समाज की गंगा-जमुनी संस्कृति का मूल स्वर है, जो आज भी उतना ही आवश्यक है।

### अंतर्मन की सच्ची भक्ति

चौथा भाव यह है कि सच्ची भक्ति बाह्य-चिह्नों में नहीं, अंतर्मन की निर्मलता, विवेक एवं प्रेम में है। कबीर के अनुसार ईश्वर मंदिर-मस्जिद, मूर्ति-तीर्थ या माला-टोपी में नहीं, अपितु मनुष्य के हृदय में बसता है। आत्म-शुद्धि, अंधविश्वास-त्याग एवं सच्चे प्रेम-भाव से ही उसकी प्राप्ति संभव है। यह ज्ञान-आधारित निर्गुण भक्ति ही कबीर-काव्य का स्थायी संदेश है।

TOPIC

D

शिल्प एवं काव्य-सौंदर्य

## TOPIC

# कबीर की भाषा-शैली एवं अलंकार

### सधुक्कड़ी (पंचमेल) भाषा

कबीर की भाषा 'सधुक्कड़ी' कही जाती है — यह साधु-संतों के घुमक्कड़ जीवन से उपजी पंचमेल खिचड़ी है, जिसमें ब्रज, अवधी, राजस्थानी, पंजाबी, खड़ीबोली एवं अरबी-फ़ारसी के शब्द घुले-मिले हैं। यह अनगढ़ किंतु अत्यंत सशक्त, सहज एवं लोकधर्मी भाषा है। कबीर शास्त्रीय रूप से पढ़े-लिखे न थे ('मसि कागद छुयो नहिं'), अतः उनकी भाषा अनुभव-जन्य एवं प्रहारक है। यही सहजता उनकी भाषा को जन-जन तक पहुँचाती है।

### दृष्टांत अलंकार

कबीर के काव्य का सर्वाधिक सशक्त शिल्प-तत्त्व दृष्टांत अलंकार है — जहाँ किसी गूढ़ भाव को परिचित उदाहरण से समझाया जाता है। सोना-गहना, जल-तरंग एवं बीज-वृक्ष के दृष्टांतों से वे अद्वैत जैसे जटिल दार्शनिक सत्य को अत्यंत सरल एवं मूर्त बना देते हैं। ये दृष्टांत लोक-जीवन से लिए गए हैं, इसीलिए सहज ही हृदय में उतर जाते हैं। दृष्टांत-कुशलता ही कबीर की काव्य-प्रतिभा की पहचान है — सौंदर्य-बोध के स्तर में इसका

### अनुप्रास एवं रूपक

रचनाओं में अनुप्रास अलंकार की सुंदर छटा है — जहाँ एक ही व्यंजन-वर्ण की आवृत्ति से नाद-सौंदर्य उत्पन्न होता है (जैसे 'देखत जग' में नाद-संगति)। साथ ही रूपक एवं प्रतीक का प्रयोग है — 'राम' निराकार ब्रह्म का प्रतीक है। 'जग बौराना' में संसार पर पागलपन का आरोप एक सशक्त लाक्षणिक प्रयोग है। ये अलंकार रचना को गेय, संगीतमय एवं भाव-प्रभावी बना देते हैं, जिससे संदेश अधिक मार्मिकता से संवेष्टित होता है।

### खंडन-मंडन शैली एवं गेयता

कबीर की काव्य-शैली 'खंडन-मंडन' की है — वे एक ओर पाखंड एवं संकीर्णता का तीखा खंडन करते हैं, दूसरी ओर एक ईश्वर एवं सच्ची भक्ति का मंडन (स्थापन) करते हैं। उनकी रचनाएँ 'पद' एवं 'सबद' शैली में हैं, जो गाने योग्य (गेय) हैं — इनमें लय एवं संगीतात्मकता है। निर्भीक प्रश्न-वाचकता, व्यंग्य एवं प्रत्यक्ष संबोधन ('संतों...') इस शैली की विशेषताएँ हैं। गेयता, दृष्टांत-योजना एवं प्रहारक स्वर मिलकर कबीर की निर्माण-कला का

## WORKED EXAMPLE

# 5 अंक — कबीर ने संसार को 'बौरा' क्यों कहा

- 1 केंद्रीय भाव दें: 'संसार पाखंड एवं विवेकहीनता में फँसकर बौरा (पागल) हो गया है — सच को छोड़कर झूठ को सत्य मान बैठा है।'
- 2 हिन्दू-आडंबर: 'पत्थर की मूर्ति पूजना, दिखावटी तीर्थ-स्नान, माला फेरना, माथे पर टीका लगाना — ये मात्र बाह्य-चिह्न हैं।'
- 3 मुस्लिम-आडंबर: 'टोपी पहनना, दिखावटी रोज़ा-नमाज़, बाँग देकर पीर बन जाना — कबीर इन्हें भी समान रूप से व्यर्थ ठहराते हैं।'
- 4 राम-रहीम व्यंग्य: 'लोग राम एवं रहीम के नाम पर लड़ते-मरते हैं, जबकि दोनों एक ही ईश्वर हैं — यही सबसे बड़ा बौरापन है।'
- 5 निष्कर्ष: 'सच्चा ईश्वर बाह्य-चिह्नों में नहीं, अंतर्मन की निर्मलता एवं प्रेम में बसता है — आडंबर-त्याग ही मुक्ति का मार्ग है।' — कबीर को नास्तिक या एक-पक्षीय कभी न कहें; वे निष्पक्ष आस्तिक हैं।

**TRY IT · SOLVE BEFORE YOU PEEK**

कबीर सबद में किन-किन बाह्याडंबरों का खंडन करते हैं — हिन्दू एवं मुस्लिम दोनों से दो-दो उदाहरण दीजिए।

**SOLUTION**

**ANSWER** हिन्दू-आडंबर — (1) पत्थर की मूर्ति-पूजा, (2) दिखावटी तीर्थ-स्नान / माला-टीका। मुस्लिम-आडंबर — (1) टोपी पहनना एवं दिखावटी रोज़ा-नमाज़, (2) बाँग (अजान) देकर पीर बन जाना। साथ ही वे राम-रहीम के नाम पर झगड़े को भी व्यर्थ ठहराते हैं। कबीर दोनों समुदायों के पाखंड पर समान, निष्पक्ष प्रहार करते हैं।

TOPIC

# कबीर की भक्ति-धारा

## TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** कबीर सगुण (साकार) भक्ति के कवि हैं, जो राम-कृष्ण की मूर्ति-पूजा करते थे।

✓ **CORRECT** कबीर निर्गुण भक्ति-धारा (ज्ञानमार्गी/ज्ञानाश्रयी शाखा) के सर्वप्रमुख कवि हैं। उनका 'राम' किसी अवतार या मूर्ति का नाम नहीं, अपितु निराकार, निर्गुण, सर्वव्यापी ब्रह्म का प्रतीक है। वे मूर्ति-पूजा, अवतारवाद एवं बाह्य-कर्मकांड के कट्टर विरोधी थे। 'पत्थर पूजे हरि मिलै' जैसे आडंबर का वे खुलकर खंडन करते हैं। अतः उन्हें सगुणोपासक समझना मूल भूल है।

## TOPIC

# 'जग बौराना' का अर्थ

### TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** कबीर कहते हैं कि संसार के लोग जन्म से ही मूर्ख/पागल पैदा होते हैं।

✓ **CORRECT** 'जग बौराना' अर्थात संसार पागल हो गया है — यह जन्मजात मूर्खता नहीं, अपितु विवेकहीनता एवं पाखंड में फँस जाने की अवस्था है। कबीर का आशय है कि संसार ने सच्चे ज्ञान एवं अंतर्मन की भक्ति को छोड़कर असत्य आडंबरों (पत्थर-पूजा, दिखावटी तीर्थ-स्नान, बाह्य-चिह्न) को सत्य मान लिया है, इसीलिए वह 'बौरा' है। यदि कोई सच कहे तो लोग उसे मारने दौड़ते हैं और झूठ पर विश्वास करते हैं — यही 'बौरापन' है। यह सामाजिक-धार्मिक व्यंग्य है, गाली नहीं।

TOPIC

# पहले पद का केंद्रीय भाव

## TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** पहले पद में कबीर अनेक देवताओं की पूजा का समर्थन करते हैं।

✓ **CORRECT** पहले पद 'हम तौ एक एक करि जांनां' का केंद्रीय भाव अद्वैत — ईश्वर की एकता — है। कबीर कहते हैं कि उन्होंने ईश्वर को 'एक' ही जाना है; जैसे सोने से बने अनेक गहने मूलतः एक ही सोना हैं, जल की अनेक तरंगें एक ही जल हैं, अनेक बीजों से उपजे वृक्ष एक ही मूल-तत्त्व के हैं — वैसे ही चराचर जगत में एक ही परम सत्ता व्याप्त है। हिन्दू-तुर्क (मुसलमान) का भेद इसी एक सत्ता को न पहचानने के कारण है। यह अनेकेश्वरवाद का नहीं, एकेश्वरवाद/अद्वैत का प्रतिपादन है।

TOPIC

# कबीर की भाषा

## TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** कबीर शुद्ध, परिष्कृत संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली में लिखते थे।

✓ **CORRECT** कबीर की भाषा 'सधुक्कड़ी' (पंचमेल खिचड़ी) कही जाती है — इसमें ब्रज, अवधी, राजस्थानी, पंजाबी, खड़ीबोली एवं अरबी-फ़ारसी के शब्द घुले-मिले हैं। यह साधु-संतों के घुमक्कड़ जीवन से उपजी अनगढ़ किंतु अत्यंत सशक्त एवं अनुभव-जन्य भाषा है। कबीर 'पढ़े-लिखे' अर्थ में शास्त्रीय कवि नहीं थे ('मसि कागद छुयो नहिं'), अतः उनकी भाषा सहज, लोकधर्मी एवं प्रहारक है, परिष्कृत-साहित्यिक नहीं।

TOPIC

# आडंबर-खंडन का उद्देश्य

## TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** कबीर हिन्दू एवं इस्लाम — दोनों धर्मों से घृणा करते थे और किसी ईश्वर को नहीं मानते थे।

✓ **CORRECT** कबीर किसी धर्म से घृणा नहीं करते, न ही नास्तिक हैं। वे दोनों धर्मों के बाह्य-आडंबर, पाखंड एवं संकीर्णता का खंडन करते हैं — पत्थर-पूजा, दिखावटी रोज़ा-नमाज़, तीर्थ-स्नान, टोपी-टीका, माला-छाप, राम-रहीम के नाम पर झगड़ा। उनका लक्ष्य एक ही निराकार ईश्वर की सच्ची, अंतर्मन की भक्ति एवं हिन्दू-मुसलमान के बीच मानवीय समता-समन्वय स्थापित करना है। वे गहरे आस्तिक एवं समाज-सुधारक संत हैं।

TOPIC

# 'टोपी-टीका' का संदर्भ

## TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** कबीर केवल हिन्दुओं के पाखंड पर प्रहार करते हैं, मुसलमानों के नहीं।

✓ **CORRECT** कबीर निष्पक्ष रूप से दोनों समुदायों के बाह्य-चिह्नों एवं आडंबरों पर समान प्रहार करते हैं। 'टीका' (तिलक), माला, मूर्ति-पूजा, तीर्थ-स्नान हिन्दू-आडंबर के प्रतीक हैं, तो 'टोपी', रोज़ा, बाँग (अजान), काबा-केबला मुस्लिम-आडंबर के। वे दोनों को व्यर्थ ठहराकर कहते हैं कि सच्चा ईश्वर बाह्य-चिह्नों में नहीं, अंतर्मन में है। यही उनकी समन्वयकारी एवं निर्भीक समाज-दृष्टि है।

## TOPIC

# कबीर का जीवन-परिचय

### TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** कबीर एक उच्च-कुलीन शास्त्र-पंडित थे जिन्होंने अनेक ग्रंथ संस्कृत में रचे।

✓ **CORRECT** कबीर का जन्म लगभग 1398 ई. में काशी (वाराणसी) के लहरतारा में हुआ माना जाता है; उनका लालन-पालन नीरू-नीमा नामक जुलाहा (बुनकर) दंपति ने किया। वे स्वामी रामानंद के शिष्य माने जाते हैं। वे शास्त्रीय रूप से 'पढ़े-लिखे' नहीं थे — 'मसि कागद छुयो नहीं' — उनका ज्ञान अनुभव-जन्य एवं सत्संग-जन्य था। उनकी वाणी उनके शिष्यों द्वारा संकलित 'बीजक' में संगृहीत है, जिसके तीन भाग हैं — साखी, सबद एवं रमैनी। उनका देहावसान लगभग 1518 ई. में मगहर में हुआ।

TOPPER TEMPLATE · MARK-BY-MARK

## 5 अंक — भावार्थ-लेखन — 'पहले पद के आधार पर कबीर ने ईश्वर की एकता (अद्वैत) को किन दृष्टान्तों से समझाया है? भावार्थ सहित स्पष्ट

1 केंद्रीय भाव एवं प्रसंग  
1 m

पहले पद 'हम तौ एक एक करि जांनं' में कबीर निर्गुण-निराकार ब्रह्म की एकता (अद्वैत) का प्रतिपादन करते हैं। वे घोषणा करते हैं कि उन्होंने ईश्वर को 'एक' ही जाना-पहचाना है। हिन्दू-तुर्क (मुसलमान) का भेद इसी एक सत्ता को न पहचान पाने के कारण उत्पन्न हुआ है — वस्तुतः दोनों का ईश्वर एक ही है।

2 पहला दृष्टान्त — सोना एवं गहने  
1 m

कबीर कहते हैं कि जैसे एक ही सोने (कंचन) से अनेक प्रकार के आभूषण बन जाते हैं — कंगन, हार, अँगूठी — परंतु उन सबका मूल-तत्त्व एक ही सोना है; वैसे ही नाम-रूप अनेक होते हुए भी परम सत्ता एक ही है। नाम-भेद से तत्त्व-भेद नहीं हो जाता।

3 दूसरा दृष्टान्त — जल एवं तरंग  
1 m

दूसरे दृष्टान्त में कबीर जल एवं उसकी लहरों (तरंग) का उदाहरण देते हैं — एक ही जल में असंख्य लहरें उठती हैं, परंतु प्रत्येक लहर जल से भिन्न नहीं; अंततः सब जल ही है। इसी प्रकार चराचर जगत के समस्त रूप उसी एक परम-तत्त्व की अभिव्यक्ति हैं।

4 तीसरा दृष्टान्त एवं हिन्दू-तुर्क भेद  
1 m

बीज एवं वृक्ष के दृष्टान्त से कबीर समझाते हैं कि अनेक बीजों एवं वृक्षों में एक ही जीवन-तत्त्व विद्यमान है। इन सहज दृष्टान्तों द्वारा वे सिद्ध करते हैं कि हिन्दू एवं तुर्क का धार्मिक भेद अज्ञान-जनित एवं ऊपरी है; ईश्वर 'केसव' (हिन्दू) एवं 'करीम' (मुसलमान) दोनों रूपों में एक ही है।

5 निष्कर्ष — समन्वय एवं अद्वैत  
1 m

इस प्रकार कबीर सोना-गहना, जल-तरंग एवं बीज-वृक्ष के अनुभव-जन्य दृष्टान्तों द्वारा अद्वैत — ईश्वर की एकता — को सरलता से स्थापित करते हैं। उनका संदेश सामाजिक-धार्मिक समन्वय का है : जब ईश्वर एक है, तो हिन्दू-मुसलमान का बैर निरर्थक है। यही पद का कालजयी भाव है।

TOPPER TEMPLATE · MARK-BY-MARK

# 3 अंक — सौंदर्य-बोध — 'दिए गए पद/सबद का काव्य-सौंदर्य (भाव + अलंकार + भाषा) स्पष्ट कीजिए।'

**1** भाव-पक्ष  
1 m

पद/सबद का भाव या तो ईश्वर की एकता (अद्वैत) है या बाह्याडंबर का खंडन। कबीर सहज, अनुभव-जन्य वाणी में या तो एक निराकार सत्ता को प्रतिपादित करते हैं या संसार के पाखंड पर तीखा प्रहार करते हुए सच्चे ज्ञान-भक्ति की ओर संकेत करते हैं।

**2** अलंकार-पक्ष  
1 m

रचना में दृष्टांत अलंकार (सोना-गहना, जल-तरंग, बीज-वृक्ष), रूपक/प्रतीक तथा अनुप्रास का सुंदर प्रयोग है। 'देखत जग बौराना' जैसी पंक्तियों में व्यंग्य एवं अनुप्रास की छटा है; गूढ़ अध्यात्म को मूर्त उदाहरणों से समझाना कबीर की विशिष्ट कुशलता है।

**3** भाषा एवं निष्कर्ष  
1 m

भाषा सधुक्कड़ी (पंचमेल खिचड़ी) है — सहज, लोकधर्मी एवं प्रहारक, जिसमें ब्रज-अवधी-राजस्थानी-खड़ीबोली के शब्द घुले हैं। गेय पद/सबद शैली, खंडन-मंडन की निर्भीक वाणी एवं दृष्टांत-योजना मिलकर कबीर की रचना को निर्गुण-काव्य का उत्कृष्ट उदाहरण बनाते हैं।

TOPPER TEMPLATE · MARK-BY-MARK

## 5 अंक — केंद्रीय भाव — 'संतों देखत जग बौराना सबद में कबीर ने संसार को बौरा क्यों कहा एवं किन आडंबरों का खंडन किया? केंद्रीय

**1** केंद्रीय भाव — 'बौरा' संसार  
1 m

इस सबद का केंद्रीय भाव यह है कि संसार पाखंड एवं विवेकहीनता में फँसकर 'बौरा' (पागल) हो गया है। उसने सच्चे ज्ञान एवं अंतर्मन की भक्ति को छोड़कर असत्य आडंबरों को सत्य मान लिया है; यदि कोई सच कहे तो उसे मारने दौड़ता है, और झूठ पर विश्वास करता है — यही उसका बौरापन है।

**2** हिन्दू-आडंबर का खंडन  
1 m

कबीर हिन्दू-समाज के आडंबरों पर प्रहार करते हैं — पत्थर की मूर्ति पूजने से ईश्वर नहीं मिलते; दिखावटी तीर्थ-स्नान, माला फेरना एवं माथे पर टीका (तिलक) लगाना मात्र बाह्य-चिह्न हैं, जिनसे सच्ची भक्ति का कोई संबंध नहीं।

**3** मुस्लिम-आडंबर का खंडन  
1 m

वे मुस्लिम-समाज के बाह्य-आचारों पर भी समान प्रहार करते हैं — टोपी पहनना, दिखावटी रोजा-नमाज़, बाँग (अजान) देकर पीर बन बैठना। कबीर निष्पक्ष हैं — किसी एक धर्म का पक्ष नहीं लेते, दोनों के पाखंड को व्यर्थ ठहराते हैं।

**4** राम-रहीम झगड़े पर व्यंग्य  
1 m

कबीर तीखा व्यंग्य करते हैं कि लोग 'राम' एवं 'रहीम' के नाम पर परस्पर झगड़ते-मरते हैं, जबकि दोनों एक ही ईश्वर के नाम हैं। नाम-भेद को लेकर लड़ना मूर्खता है; इसी अंधविश्वास एवं संकीर्णता के कारण संसार 'बौरा' है।

**5** निष्कर्ष — सच्चा ज्ञान  
1 m

इस प्रकार कबीर पत्थर-पूजा, तीर्थ-स्नान, टोपी-टीका-माला-छाप एवं राम-रहीम के झगड़े — सभी बाह्याडंबरों का खंडन करते हैं। उनका संदेश है कि सच्चा ईश्वर बाह्य-चिह्नों में नहीं, अंतर्मन की निर्मलता एवं प्रेम में बसता है। आडंबर त्यागकर एक निराकार सत्ता की सच्ची भक्ति ही मुक्ति का मार्ग है।

## PYQ PATTERNS








# Top PYQ patterns to drill

#1	पहले पद के आधार पर कबीर ने ईश्वर की एकता (अद्वैत) को किन दृष्टान्तों से समझाया है? स्पष्ट कीजिए। (5 marks)	वार्षिक
#2	'संतों देखत जग बौराना'	कबीर ने संसार को 'बौरा' (पागल) क्यों कहा? किन-किन आडंबरों का खंडन किया? (5 marks) — अधिकांश वर्षों में
#3	कबीर की काव्य-भाषा (सधुक्कड़ी/पंचमेल) एवं शैली की विशेषताएँ बताइए। (3 marks)	वार्षिक
#4	कबीर के अनुसार सच्ची भक्ति/सच्चा ज्ञान क्या है? आडंबर से वह कैसे भिन्न है? (3 marks)	2020, 2022, 2024
#5	दिए गए काव्यांश का भावार्थ/काव्य-सौंदर्य (अलंकार सहित) स्पष्ट कीजिए। (4-6 marks)	लगभग प्रति परीक्षा

## MARKS DISTRIBUTION

# 10-year marks distribution

### 10-YEAR PYQ MARKS DISTRIBUTION

ईश्वर की एकता एवं अद्वैत (एक ही सत्ता का चराचर में व्याप्त होना)		20%
बाह्याडंबर/पाखंड का खंडन (पत्थर-पूजा, टोपी-टीका, माला-छाप)		22%
हिन्दू-मुसलमान (तुर्क) के भेद की निरर्थकता एवं समन्वय		16%
कबीर की सधुक्कड़ी भाषा एवं काव्य-शैली की विशेषताएँ		10%
काव्य-सौंदर्य / अलंकार (दृष्टांत, रूपक, अनुप्रास)		12%
कवि-परिचय एवं निर्गुण भक्ति-धारा		8%
काव्यांश-आधारित भावार्थ एवं शब्दार्थ		12%

RECAP · MEMORISE THESE

# स्मरणीय बिंदु

**1** कवि-परिचय — कबीर (जन्म लगभग 1398 ई., काशी/लहरतारा — देहावसान लगभग 1518 ई., मगहर) — निर्गुण ज्ञानमार्गी संत-कवि, रामानंद के शिष्य। संकलन — बीजक (साखी, सबद, रमैनी)।

**2** दो रचनाएँ — पद 'हम तौ एक एक करि जांनां' — अद्वैत/ईश्वर की एकता। सबद 'संतों देखत जग बौराना' — पाखंड/आडंबर का खंडन।

**3** अद्वैत-दृष्टांत — सोना → अनेक गहने · जल → अनेक तरंग · बीज → अनेक वृक्ष ⇒ एक ही परम सत्ता। केसव = करीम।

**4** खंडित आडंबर — पत्थर-पूजा · तीर्थ-स्नान · माला-टीका (हिन्दू); टोपी · रोज़ा · बाँग (मुस्लिम); राम-रहीम झगड़ा।

**5** भाषा एवं शैली — सधुक्कड़ी (पंचमेल खिचड़ी); दृष्टांत + अनुप्रास + रूपक; खंडन-मंडन; गेय पद/सबद।

**6** अंक-निधि — अद्वैत-दृष्टांत — 86% परीक्षाओं में। आडंबर-खंडन — 80%। काव्य-

## WHAT'S NEXT

# अगला अध्याय

- अध्याय 2 (काव्य) — मीरा के पद (आरोह भाग-1)।
- 15 MCQ की त्वरित-ड्रिल हल करें — लक्ष्य  $\geq 12/15$ ।
- 30 अंकी पैटर्न-पेपर लिखें — पूर्ण आदर्श उत्तरों के साथ अभ्यास करें।

# आपने आरोह का पहला काव्य पाठ समाप्त किया।

अद्वैत · आडंबर-खंडन · हिन्दू-मुस्लिम समन्वय — अब परीक्षा में सिद्ध कीजिए।

[readyforboards.com](https://www.readyforboards.com)

Helpline: +91 70330 05444

Boards prep that builds confidence, not anxiety.